मध्यप्रदेश शासन
वन विभाग

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जुलाई-सितम्बर, 2020

RNI Reference No : 1322876 • Title Code : MPHIN34795 • Year : 4 • Edition : 15

Ahamadpur Nursery, Bhopal

शल्यकर्णी (*Dillenia pentagyna*)

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश

जुलाई-सितम्बर, 2020

Editorial Board :

Anand Kumar

Principal Chief Conservator of Forests (Research, Extension and Lok Vaniki)

Rajesh Kumar

Additional Principal Chief Conservator of Forests (CAMPA)

J.S. Chauhan

Additional Principal Chief Conservator of Forests (Wildlife)

Atul Jain

Additional Principal Chief Conservator of Forests (Madhya Pradesh Rajya Van Vikas Nigam Limited)

K. Raman

Additional Principal Chief Conservator of Forests (Green India Mission)

Chitranjan Tyagi

Additional Principal Chief Conservator of Forests (JFM / Development)

Atul Shrivastav

Additional Principal Chief Conservator of Forests (M.P. State Minor Forest Produce Trading & Development Co-operative Federation)

Alvin Burman

DCF (Research, Extension and Lok Vaniki)

B.K. Dhar

Prachar Adhikari (Samanvay)

Patron :

Rajesh shrivastav
Principal Chief Conservator of Forests
(HoFF), Satpura Bhawan, Bhopal

Editor :

Dr. Sanjay Kumar Shukla
Additional Principal Chief Conservator of Forests
(Research, Extension and Lokvaniki) Bhopal

Prachar Prasar Prakosth Team :

Deepak Meshram
Gaurav Rajput

Contact :

Prachar Prasar Prakosth, Room No. 140,
Satpura Bhawan, Bhopal
Email : dcfpracharprasar@mp.gov.in
Contact : 0755-2524293

Owner & Publisher :

Prachar Prasar Prakosth (M.P.F.D.)
Printed by Madhya Pradesh Madhyam
Bhopal
Contact : 0755-2524293

वनांचल संदेश
जुलाई- सितम्बर 2020

माननीय वन मंत्री महोदय डॉ. कुंवर विजय शाह के सफल प्रयास	6
वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस का आयोजन	8
वन विहार में फिर शुरू हुई पर्यटकों की चहल-पहल	10
नर बाघ का वन विहार आगमन	12
भारतीय वन सेवा के परिवारों के महिला क्लब द्वारा आयोजित स्वास्थ्य एवं पर्यावरण जागरुकता कार्यक्रम	13
प्रमुख सचिव वन अशोक वर्णवाल द्वारा वन क्षेत्रों का निरीक्षण	14
फॉरेस्ट लैंडस्केप रेस्टोरेशन : ग्रीन इंडिया मिशन	15
रीवा-सीधी परियोजना मण्डल में डिपॉजिट वर्क के अन्तर्गत वृक्षारोपण	21
म.प्र. राज्य वन विकास निगम ने पथरीली पहाड़ी पर वृक्षारोपण कर नया इतिहास रचा	23
शल्यकर्णी (*Dillenia pentagyna*): दुर्लभ एवं संकटापन्न वृक्ष प्रजाति	24
Covid -19 Relief Campaign : Madhya Pradesh Tiger Foundation Society	25
विंध्य हर्बल्स रोग प्रतिरोधी औषधि किट	29
सजग वन अमला भोपाल	31
ग्राम वन समिति	32
राष्ट्रीय वन शहीद दिवस-11 सितम्बर : वनकर्मियों के बलिदान का सम्मान	36
भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति (जुलाई-सितम्बर 2020)	37
अखबारों के आईने में	38
कविता :''वन कोषों का विघटन यों ही''	39

संदेश

प्रदेश में वन विभाग द्वारा वनों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में प्रभावी पहल हुई है, जिसका लाभ प्रदेशवासियों को मिल रहा है। वन तथा प्रकृति के प्रति जन-चेतना जागृत करने के उद्देश्य से वृक्षारोपण कार्य तथा वन्य प्राणियों की सुरक्षा तथा महत्ता को बनाए रखने के कई महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस तथा राष्ट्रीय शहीद दिवस जैसे आयोजनों से वन एवं वन्यजीवों के प्रति उत्तम कार्य करने की प्रेरणा मिलती रही है। राज्य सरकार के कोविड-19 के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए विभाग द्वारा जन-सामान्य तक आयुर्वेदिक औषधियां तथा जीवन-यापन की वस्तुएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। कोविड-19 राहत कार्यों में वन-सेवा महिला क्लब का भी सराहनीय योगदान हैं।

इस अंक में जुलाई से सितम्बर माह में वन विभाग की विभिन्न गतिविधियों का उल्लेख किया जा रहा है।

आशा है कि, प्रदेश को हरा-भरा बनाये रखने में वन विभाग के सभी शासकीय, गैर शासकीय संगठन, जन-सामान्य के साथ मिलकर अपने कर्तव्यों का निर्वहन पूरी निष्ठा और सक्रियता के साथ करते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

आनन्द कुमार
भा.व.से

प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

संपादकीय

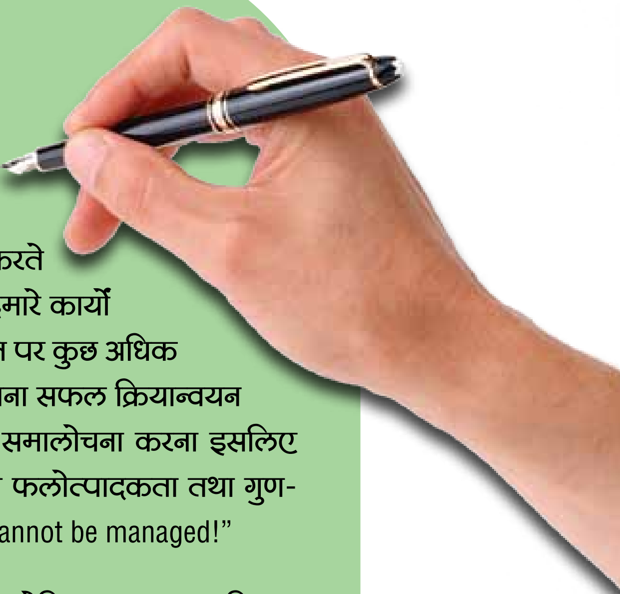

मध्यप्रदेश वनांचल संदेश हम सब की सकारात्मक भागीदारी से चलने वाला एक जीवंत संदेश वाहक है। इसमें हम विभाग द्वारा किए गए कार्यों तथा शासन की जनकल्याण की योजनाओं की जानकारियां प्रस्तुत करते हैं और अपने कार्यों का आत्मविश्लेषण करते हैं। गत दिनों हमने क्या-क्या कार्य किए हैं? कितनी जिंदगियों को हमारे कार्यों का लाभ पहुँचा है? हमारे किन-किन कार्यों से लोगों को अपनी नियति पर कुछ अधिक नियंत्रण मिलता है? हमने राष्ट्र की और राज्य की वन नीति का कितना सफल क्रियान्वयन किया है? आदि। इन कार्यों का समय-समय पर आत्मचिंतन तथा समालोचना करना इसलिए भी आवश्यक है कि हम यह जान सकें कि हमारे विभिन्न कार्यों की फलोत्पादकता तथा गुण-कारिता कितनी है। कहा भी गया है: “What cannot be measured cannot be managed!”

तो पिछले दिनों में हमने क्या किया? वन्य प्राणी शाखा के द्वारा कोविड-19 राहत अभियान चलाया गया। अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस का आयोजन किया गया। राज्य वन विकास निगम द्वारा पथरीली पहाड़ियों पर वृक्षारोपण किया गया। विभाग के द्वारा वनकर्मियों के बलिदान के सम्मान हेतु वन शहीद दिवस का आयोजन किया गया। इसके साथ ही ग्राम वन समितियों की सहभागिता बढ़ाई गई, जो विभाग की एक उत्कृष्ट उपलब्धि है। इनका समावेश मध्यप्रदेश वनांचल संदेश के इस अंक में किया गया है। साथ ही माननीय वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह के सफल प्रयासों की प्रस्तुति भी इस अंक में चित्रित है।

आशा है कि पाठकों को यह अंक पसंद आएगा। मध्यप्रदेश वनांचल संदेश के प्रस्तुतिकरण को हम और अच्छा कैसे बना सकते हैं, इसकी जानकारी आप मुझे apccfre@mp.gov.in पर भेज सकते हैं। मैं पूरा प्रयास करूंगा कि आगामी अंकों में इनका समावेश हो जाए। क्षेत्रीय अधिकारियों से यह अपेक्षा है कि वे शासन कि जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी तथा विभाग के विविध प्रयासों की अधिकाधिक जानकारी साझा कर आगामी अंकों में योगदान देंगे।

शुभकामनाओं सहित।

आपका,

डॉ. संजय कुमार शुक्ला
भा.व.से.
अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक
अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी
म.प्र. भोपाल

01 माननीय वन मंत्री महोदय डॉ. कुंवर विजय शाह के सफल प्रयास

डॉ. कुंवर विजय शाह का जन्म 01 नवम्बर, 1962 को मकड़ई राजघराने में हुआ। उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा इन्दौर से प्राप्त की। वे 1990 में पहली बार हरसूद विधायक के रूप में निर्वाचित हुए। अपने पहले कार्यकाल में ही वे प्रदेश में एक जुझारू, जागरुक विधायक एवं मुख्य वक्ता के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुके थे। विकास की दौड़ में पिछड़े हरसूद विधानसभा के वनांचल क्षेत्र के लिए नई योजनाएं, नई सुविधाएं देकर विकास ही उनका मुख्य लक्ष्य रहा। यही कारण है कि विगत् 30 वर्षो से वे अपराजेय यौद्धा के रूप मे स्थापित हुए हैं। इस दौरान वे पर्यटन एवं सांस्कृतिक मंत्रालय के कबिनेट मंत्री, आदिम जाति कल्याण मंत्री, वन एवं आदिम जाति कल्याण मंत्री, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री, स्कूल शिक्षा मंत्री और वर्तमान मे वन मंत्री के रूप मे कार्यरत हैं। उनके द्वारा गरीबों के उत्थान के लिए अनेक कार्य किये गये जिसमें से आदिवासी उद्यमिता प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास केन्द्र एक है।

आदिवासी उद्यमिता प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास केन्द्र आंवलिया-

वन वृत्त खंडवा के वन ग्रामों एवं राजस्व ग्रामों मे निवासरत अनुसुचित जनजाति एवं अन्य वर्ग के गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले ग्रामीणों के उत्थान तथा आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करने कि लिए वर्ष 2007-08 में तत्कालीन वन एवं आदिम जाति कल्याण मंत्री तथा वर्तमान वन मंत्री माननीय डॉ. कुंवर विजय शाह के अथक प्रयासों से वनमंडल खंडवा अन्तर्गत खालवा ब्लॉक में स्थित वनग्राम आवंलिया में केन्द्र सरकार द्वारा आदिम जाति कल्याण विभाग को बजट प्रदाय कर वनमंडल खंडवा के माध्यम से आदिवासी उद्यमिता प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास केन्द्र आंवलिया की स्थापना की गई। प्रशिक्षण हेतु एक बड़ा हाल, सिलाई केन्द्र, 10 सिलाई मशीन उपलब्ध कराई गई हैं। प्रशिक्षण केन्द्र अन्तर्गत छात्र/छात्राओं के निवास हेतु सर्व-सुविधायुक्त महिला एवं पुरुष छात्रावास उपलब्ध कराया गया।

प्रशिक्षणार्थियों के मनोरंजन हेतु खूबसूरत गार्डन, खेल का मैदान एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। वन भ्रमण एवं बाहर भ्रमण हेतु विडियोकोच बस सुविधा उपलब्ध कराई गई है। आदिवासी उद्यमिता प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास केन्द्र आंवलिया में अभी तक एन.जी.ओ. सेल्फ इम्प्लायमेंट एजुकेशन सोसायटी, सिवनी द्वारा 17 सत्रों मे 510 छात्राओं को सिलाई प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण उपरान्त 231 छात्राओं को बैंगलौर में रोजगार उपलब्ध कराया गया।

25 सत्रों में 712 छात्रों को सुरक्षा गार्ड एवं सेफ्टी मेनेजमेन्ट प्रशिक्षण दिया गया इनमें से 540 छात्रों को मण्डीदीप एवं भोपाल में रोजगार उपलब्ध कराया गया है। 120 छात्रों को ड्रायविंग प्रशिक्षण दिया जाकर ड्रायविंग लाइसेंस बनवाया गया है। जिससे आदिवासी ग्रामीणों के आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है। इस प्रशिक्षण केन्द्र से खालवा ब्लॉक में आंवलिया वनग्राम एवं आसपास के ग्रामों के गरीब आदिवासियों की उन्नति का स्वप्न साकार हो रहा है। रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण से बेरोजगारी दूर किये जाने के हर सम्भव प्रयास किये जा रहे हैं। अभी प्रयासों का सिलसिला थमा नहीं है। यह तो बस पड़ाव है, मंजिल नहीं। माननीय वन मंत्री महोदय डॉ. कुंवर विजय शाह के लगन एवं परिश्रम का ही फल है कि आज वनग्राम आंवलिया स्थित आदिवासी उद्यमिता प्रशिक्षण एवं क्षमता विकास केन्द्र अनेक चुनौतियों एवं विषमताओं के ऊपर उठकर वर्तमान में मध्यप्रदेश ही नहीं बल्कि भारत में अपनी पहचान बना रहा है। आदिम जाति कल्याण मंत्री रहते हुए श्री शाह ने आदिवासियों के विकास लिए हर क्षेत्र में काम किया। जहां एक ओर बुनियादी सुविधाओं शिक्षा सड़क, पानी, बिजली के क्षेत्र में तस्वीर बदली, वहीं दूसरी ओर आदिवासी संस्कृति, सभ्यता एवं बोलियों के संरक्षण के क्षेत्र में अनेक कार्य किये हैं। जिसमें खालवा क्षेत्र में वन्य रेडियो स्टेशन कि स्थापना भी प्रमुख है। यह एफ. एम. रेडियो स्टेशन 01 नवम्बर, 2011 को खालवा में स्थापित किया गया जिसमें कोरकू बाहुल्य क्षेत्र होने से कोरकू, गोंड बोली में सभी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

02 वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस (29.07.2020) के मौके पर माननीय मंत्री वन मध्यप्रदेश शासन डॉ. कुंवर विजय शाह वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में उपस्थित रहे। इस अवसर पर प्रमुख सचिव वन श्री अशोक वर्णवाल, सचिव वन श्री एच.एस. मोहन्ता, वन बल प्रमुख श्री राजेश श्रीवास्तव, मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक श्री एस.के. मंडल, मुख्य कार्यपालन अधिकारी ईको पर्यटन विकास बोर्ड श्री एस.एस. राजपूत, सदस्य सचिव जैवविविधता बोर्ड श्री आर. श्रीनिवास मूर्ति, अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक (वन्यप्राणी) श्री जे.एस. चौहान एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। कोविड - 19 के संदर्भ में केंद्रीय शासन एवं राज्य शासन द्वारा समय-समय पर दिये गये निर्देशों का अनुपालन करते हुये तथा संभावित संक्रमण की रोकथाम के लिये एवं भोपाल में लॉकडाउन होने के कारण वन विहार में मध्यप्रदेश टाइगर फाउंडेशन सोसायटी द्वारा वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में माननीय वन मंत्री द्वारा वाइल्ड लाइफ हेरिटेज ऑफ मध्यप्रदेश टाइगर का विमोचन, पन्ना टी-3 बाघ का संक्षिप्त विवरण एवं वीडियो का विमोचन, वन विहार फेसबुक पेज का विमोचन किया गया साथ ही मध्यप्रदेश टाइगर फाउंडेशन द्वारा बाघ दिवस पर आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा की गई। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी द्वारा पन्ना राष्ट्रीय उद्यान द्वारा निर्मित वृत्त चित्र तथा स्वर्ग का पंछी 'दूधराज' वृत्तचित्र का भी लोकार्पण किया गया।

कार्यक्रम के अंत में वन विहार राष्ट्रीय उद्यान-जू में तितली पार्क का लोकार्पण तथा ब्रोशर का विमोचन किया गया। यह कार्यक्रम यू ट्यूब एवं फेसबुक पर सजीव प्रसारित किया गया। इस अवसर पर भारतीय स्टेट बैंक के स्थानीय प्रधान कार्यालय द्वारा वन विहार के नर बाघ पन्ना को गोद लेने संबंधी प्रमाण-पत्र भी माननीय वन मंत्री जी द्वारा प्रदान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन श्री ए.के. जैन, सहायक संचालक वन विहार द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अंत में संचालक वन विहार श्रीमती कमलिका मोहन्ता द्वारा उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

03 वन विहार में फिर शुरू हुई पर्यटकों की चहल-पहल

भोपाल का वन विहार राष्ट्रीय उद्यान एक बार फिर पर्यटकों की चहल-पहल से गुलजार हो उठा है। लॉकडाउन के बाद 22 जून, 2020 से खुले वन विहार में 7 जुलाई तक 4,038 पर्यटक आ चुके हैं। इससे पार्क को 1 लाख 80 हजार 710 रुपये की राजस्व प्राप्ति हुई है। सुरक्षा की दृष्टि से वन विहार में प्रवेश संबंधी दिशा-निर्देश भी जारी किये गये हैं।

पार्क में भ्रमण करने आई श्रीमती चित्रलेखा विद्यार्थी का कहना है कि इतने दिनों घर में बंद रहने के बाद आज अपने परिवार के साथ यहाँ आकर प्राकृतिक वातावरण में बहुत अच्छा लग रहा है। वहीं अशोका गार्डन की श्रीमती पलक प्रसन्ना कहती हैं पहले भी वन विहार आना हुआ लेकिन आज अनुभूति ही कुछ अलग है। इतने दिन लॉकडाउन में रहने के बाद आजादी का अहसास हो रहा है। सभी पर्यटक मास्क और दूरी का पालन कर रहे हैं।

दो शिफ्ट में खुलता है उद्यान

वन विहार पर्यटकों के लिये सुबह 6.30 बजे से 12 .00 बजे तक और दोपहर 3.00 से 6.30 बजे तक 2 शिफ्टों में पर्यटकों के लिये खोला जाता है। इस बीच दोपहर 12.00 से 3.00 बजे तक का समय पार्क की सफाई और सेनिटाइज करने के लिए आरक्षित रखा गया है। प्रवेश द्वार-2 बन्द होने के बावजूद उत्साह में कमी नहीं

आई है। वन विहार में कार्यरत एक कर्मचारी के 28 जून को कोरोना पॉजिटिव पाये जाने के बाद सैर-सपाटा की ओर स्थित प्रवेश द्वार-2 को अस्थायी रूप से बंद करने के बावजूद पर्यटकों की संख्या में कोई कमी नहीं आई है। फिलहाल पर्यटक प्रवेश द्वार क्रमांक एक से ही प्रवेश कर रहे हैं। वन्य प्राणियों के साथ प्राकृतिक सौन्दर्य का आनंद लेते हुए पर्यटकों का नजारा इन दिनों यहाँ आम है।

प्रवेश संबंधी दिशा-निर्देश

- ✳ पर्यटकों हेतु भ्रमण का समय 6:30 से 12: 00 बजे तक दोपहर 3:00 बजे से सायं 6: 30 बजे तक।
- ✳ पर्यटकों को प्रात: 11: 30 बजे तक तथा सायंकाल 6: 00 बजे तक वन विहार में प्रवेश दिया जाएगा।
- ✳ वन विहार में आगामी आदेश तक प्रतिदिन अधिकतम 600 पर्यटकों को ही प्रवेश दिया जावेगा।
- ✳ आगामी आदेश तक वन विहार में 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों तथा 65 वर्ष से अधिक के वरिष्ठ नागरिकों को प्रवेश नहीं दिया जा सकेगा।
- ✳ सभी पर्यटकों को शासन द्वारा कोविड-19 हेतु निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार मास्क लगाकर प्रवेश करना होगा।
- ✳ प्रत्येक पर्यटक को प्रवेश द्वार पर थर्मल स्क्रीनिंग कराना अनिवार्य है। नियत तापमान से अधिक पाए जाने पर किसी भी स्थिति में प्रवेश नहीं दिया जावेगा।
- ✳ पर्यटकों को ऑनलाइन टिकट से ही वन विहार में प्रवेश दिया जा रहा है।
- ✳ मोटरसाइकिल पर केवल दो व्यक्ति को ही प्रवेश।
- ✳ चार पहिया वाहन में निर्धारित क्षमता से अधिक व्यक्तियों को प्रवेश नहीं दिया जावेगा।
- ✳ मिनी बस, बड़ी बस एवं व्यावसायिक वाहनों इसमें 4 या उससे अधिक हैं उन्हें प्रवेश दिया जाना आगामी आदेश तक स्थगित रहेगा।
- ✳ पर्यटकों को वन विहार में आगामी आदेश तक किराए की साइकिल उपलब्ध नहीं हो सकेंगी।
- ✳ मुख्य मार्ग पर भी पर्यटक निर्धारित दूरी बनाए रखने का पालन करना अनिवार्य होगा।
- ✳ मुख्य मार्ग पर बाड़ों के अतिरिक्त कोई भी पर्यटक पक्की सड़क से नीचे नहीं उतरेगा।
- ✳ पर्यटकों को वन्य प्राणियों के बाड़ों के सामने चिन्हित स्थल पर सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए ही वन्य प्राणियों को दर्शन करना होगा।
- ✳ वन्य प्राणियों के बाड़ों के सामने स्थित रेलिंग आदि का स्पर्श करना प्रतिबंधित रहेगा।
- ✳ समस्त पर्यटकों को भारत सरकार द्वारा कोविड-19 के बचाव हेतु जारी के दिशा-निर्देशों का पालन करना अनिवार्य होगा।

04 नर बाघ का वन विहार आगमन

कान्हा टाइगर रिजर्व मंडला के घोरेला बाड़े में रखे गए नर बाघ को दिनांक 06.06.2018 को प्रातः 10:30 बजे वन विहार राष्ट्रीय उद्यान लाया गया। इस नर बाघ ने महाराष्ट्र राज्य से बैतूल जिले में प्रवेश किया था। मुख्य वन्यप्राणी अभिरक्षक महाराष्ट्र के अनुसार इस बाघ द्वारा अक्टूबर 2018 में अमरावती जिले में दो जनहानि की गयी थी। यह बाघ दिसम्बर 2018 में भटक कर बैतूल आ गया था। उक्त नर बाघ को पूर्व में 11.12.2018 के बैतूल जिले के सारणी कस्बे के रिहायशी इलाके से रेसक्यू किया जाकर सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में छोडकर इसे प्राकृतिक रहवास में रहने का एक अवसर भी प्रदान किया गया, किन्तु इस बाघ की रिहायशी क्षेत्र में रहने एवं लौटने की प्रवृति के कारण यह दुबारा रिहायशी क्षेत्र में पहुंच गया था तत्पश्चात् इसको दिनाँक 10.02.2019 को पुनः बैतूल जिले के सारणी कस्बे के रिहायशी क्षेत्र से रेस्क्यू किया जाकर कान्हा टाइगर रिजर्व के घोरेला बाड़े में रखा गया था। उक्त नर बाघ को कान्हा टाइगर रिजर्व के सहायक संचालक एवं वन्यप्राणी चिकित्सक के दल वन विहार राष्ट्रीय उद्यान लाया गया है। संचालक वन विहार को सुझाए गए नामों में संचालक द्वारा इस बाघ का नाम सरन रखा गया है ।

05 भारतीय वन सेवा के परिवारों के महिला क्लब द्वारा आयोजित स्वास्थ्य एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम

दिनांक 09.09.2020 को परिक्षेत्र सीहोर अंतर्गत बीट बिलकिसगंज में भारतीय वन सेवा के परिवार के महिला क्लब द्वारा आदिवासी बाहुल्य वनग्राम बीलखेड़ा में आदिवासी भाईयों-बहनों, माताओं एवं बच्चों को कोविड-19 महामारी से बचने हेतु जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें महिला क्लब द्वारा आदिवासी भाईयों-बहनों को स्वयं बनाये गये मास्क वितरित किये गये एवं कोरोना रोकथाम हेतु साबुन, सेनेटाइजर वितरित किया गया और इसके उपयोग के बारे में विस्तार से समझा गया, तदुपरांत समस्त ग्रामवासियों को अध्यापकों के माध्यम से वनग्राम के बच्चों को खेलकूद सामग्री जैसे फुटबॉल, क्रिकेट सामग्री एवं हॉकी आदि वितरित किये गये। ताकि बच्चे शारीरिक रूप से स्वस्थ रहें।

महिला क्लब के चिकित्सक सदस्यों द्वारा कोविड-19 महामारी एवं अन्य महामारी से बचने हेतु ग्रामीणों को सुझाव दिये गये। अंत में स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के महत्व के बारे में ग्रामीणों को इसकी आवश्यकता एवं महत्व के बारे में समझाया गया। तत्पश्चात् सतस्त ग्रामीण परिवारों को लगभग 50 मुनगा के पौधों का वितरण किया गया और इसके महत्व को समझाया गया।

वनग्राम बीलखेड़ा के माध्यमिक स्कूल प्रांगण में फलदार पौधे जैसे मुनगा, आम, आंवला का रोपण किया गया और इनकी सुरक्षा के लिये ट्री-गार्ड लगाये गये। ग्रामीणों एवं शिक्षकों, छात्रों को इन लगाये गये पौधों को समय-समय पर पानी देने के लिये प्रेरित किया गया। वनग्राम बीलखेड़ा में किये गये पर्यावरण एवं स्वास्थ्य क्रियाकलाप उपरांत परिक्षेत्र सीहोर के ही बीट पाटनी अंतर्गत आदिवासी बाहुल्य वनग्राम सालीखेड़ा में उपरोक्तानुसार समस्त क्रियाकलापों को दोहराया गया।

06 प्रमुख सचिव वन अशोक वर्णवाल द्वारा वनक्षेत्रों का निरीक्षण

प्रमुख सचिव वन अशोक वर्णवाल ने विदिशा जिले में वर्ष 2009 में रोपे गए वृक्षों का निरीक्षण किया। वन विकास निगम द्वारा वर्ष 2009 में रोपे गए वृक्षों से इस वर्ष 600 घन मीटर लकड़ी का उत्पादन हुआ उन वनों का भी अवलोकन किया। भ्रमण के दौरान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख राजेश श्रीवास्तव, प्रबंध संचालक, म.प्र. राज्य वन विकास निगम आर.के. गुप्ता, क्षेत्रीय मुख्य प्रबंधक यू. के. सुबुद्धि, मुख्य वन संरक्षक रविन्द्र सक्सेना, संभागीय प्रबंधक आर्दश श्रीवास्तव, वन मण्डलाधिकारी राजवीर सिंह सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे। प्रमुख सचिव वन विदिशा जिले के शमशाबाद परिक्षेत्र के अंतर्गत ग्राम रतवा समीप वन विकास निगम द्वारा वर्ष 2009 तथा वर्ष 2012 में किये गये सघन सागौन वृक्षारोपण का निरीक्षण किया।

प्रमुख सचिव वर्णवाल ने मौके पर वृक्षारोपण क्षेत्रों के तकनीकी पहलू पर, विभाग एवं निगम के वरिष्ठ अधिकारियों से विस्तार पूर्वक चर्चा की। वन विकास निगम के वृक्षारोपण को देखकर प्रमुख सचिव महोदय ने प्रसन्नता व्यक्त कर ऐसे कार्य को जारी रखने के निर्देश दिए।

07 फॉरेस्ट लैंडस्केप रेस्टोरेशन -ग्रीन इंडिया मिशन

पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नेशनल एक्शन प्लान फॉर क्लाइमेट चेंज के 8 मिशनों में से एक 'नेशनल मिशन फॉर ए ग्रीन इंडिया' के तहत् 50 लाख हे. क्षेत्र में वनावरण तैयार किया जाना, 50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र वनों को सुधारना एवं वनों पर आधारित 30 लाख परिवारों की आजीविका में सुधार करने का लक्ष्य रखा गया है।

मिशन के अन्तर्गत संवहनीय विकास के अति आवश्यक पहलुओं को संबोधित करते हुए जलवायु परिवर्तन के खतरों के मद्देनजर अर्थव्यवस्था एवं प्राकृतिक संसाधनों के बीच निकट संबंध को पहचानते हुए देश के प्राकृतिक जैविक संसाधनों के विस्तारण, प्रकार एवं गुणवत्ता को खतरे से बचाने का प्रयास है।

जलवायु परिवर्तन के परिपेक्ष्य में ग्रीन इंडिया मिशन द्वारा ईको सिस्टम सेवाओं के विकास को स्थानीय समुदायों की आजीविका को ध्यान में रखते हुए समग्र रूप से उपचार प्रस्तावित है, जिसके तहत् वनों का सुधार एवं पुनरूद्धार के साथ-साथ वन आश्रित स्थानीय समुदाय को वैकल्पिक एवं वन आधारित आजीविका के साधन उपलब्ध कराना एवं उनकी क्षमता विकास किया जाना प्रस्तावित है।

मध्यप्रदेश में ग्रीन इंडिया मिशन के क्रियान्वयन हेतु लैण्डस्केप आधारित परियोजना तैयार की गई है। इसके तहत् ऐसे क्षेत्रों के उपचार की पहचान की गई है जो जलवायु परिवर्तन के परिणामों से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होना संभावित हैं एवं साथ ही साथ ऐसे वन क्षेत्र जिनके गुणवत्ता व घनत्व में कमी होने से जलवायु को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करेंगे। इसके तहत् वर्तमान परिदृश्य, अल्पकालिक परिदृश्य एवं दीर्घकालिक परिदृश्यों में जलवायु परिवर्तन के परिणामों को वैज्ञानिक अध्ययनों एवं मॉडलों को आधार बनाया गया है।

Case 1 : Division- North Betul (Ecosystem Services Improvement Project)

Submission : 2.1.3 Improving forest quality : Enhancing and restoring carbon stocks in forest lands

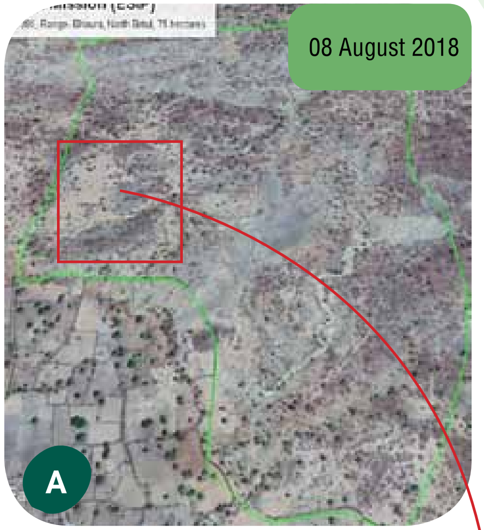

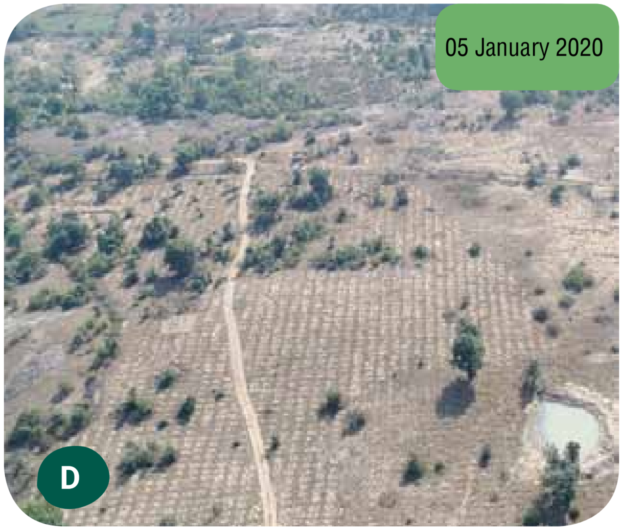

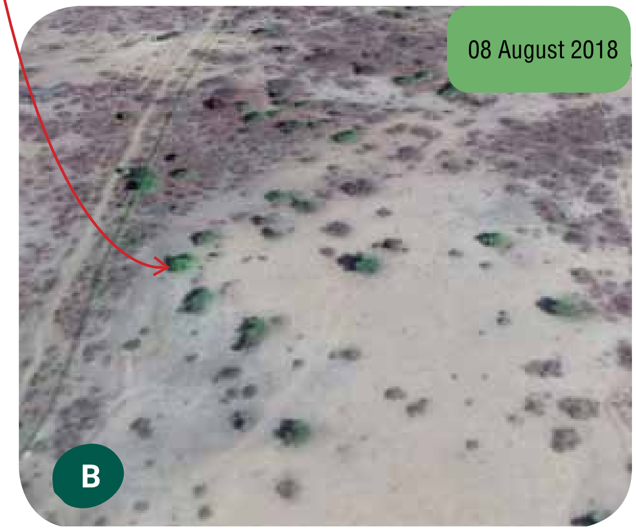

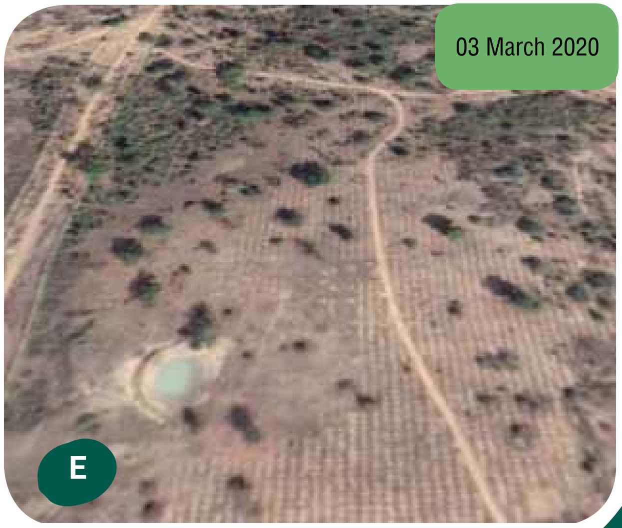

Location :

22°18’45.89”N, 77°48’17.96”E

Google Earth images
A. 08 August 2018
B. 08 August 2018
C. 25 March 2020
E. 03 March 2020

Drone Photograph
D. 05 January 2020

Landscape	Satpura Narmada
Division	North Betul
Mili-watershed	5D5A2h
Range	Bhaura
compartment	PF 391
Beat	Koyalari
JFMC	Koyalbuddi
Scheme	ESIP
Project Duration	2018-2022
Submission	2.1.3 Investments in restoration works on degraded forestlands
project cost	192.58 lakhs
Area	75 ha
Planting Year	2019
soil organic carbon Yo	0.330 %
Plants Planted	75000
species	Teak, Karanj, Aonla, Shisoo, Bans, Baheda, Neem, Khamer
Survival %	97.12% (as on May 2020)

Status of Natural Regeneration

	Baseline Year Y0	First Year Y1
No of Grids	34	34
Survey period	May 2019	October 2019
Regeneration per ha	231.61	1080.88
Area under Natural Regeneration (%)	0	20.59

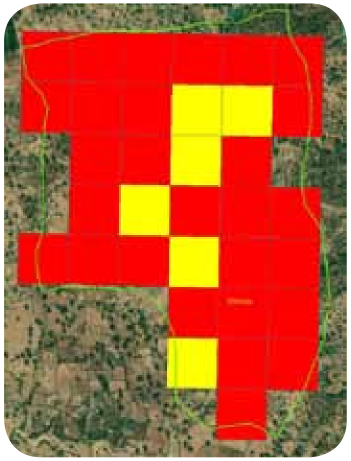

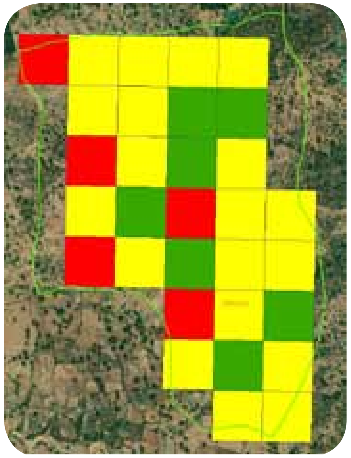

The Ground Reality

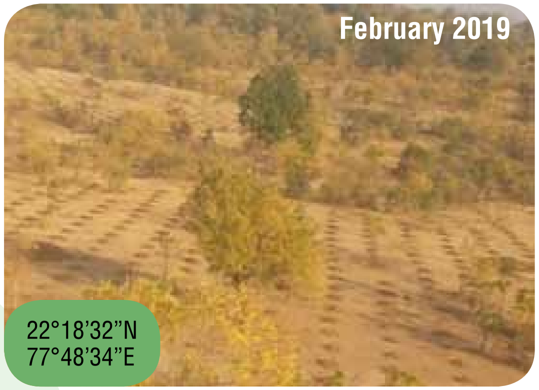

Case 2: Division- North Betul (Ecosystem Services Improvement Project)

2.1.3 Investments in restoration works on degraded forest lands

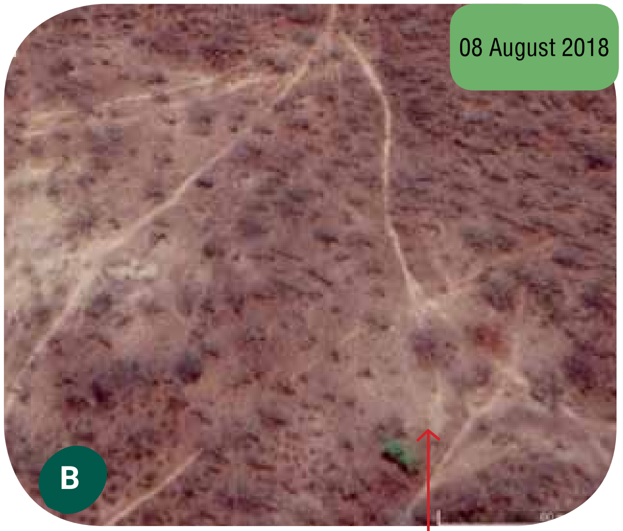

Location :

22°12’19.86”N

77°44’55.00”E

Google Earth images
A. 08 August 2018
B. 08 August 2018
C. 03 March 2020

Drone Photograph
D. 09 June 2020

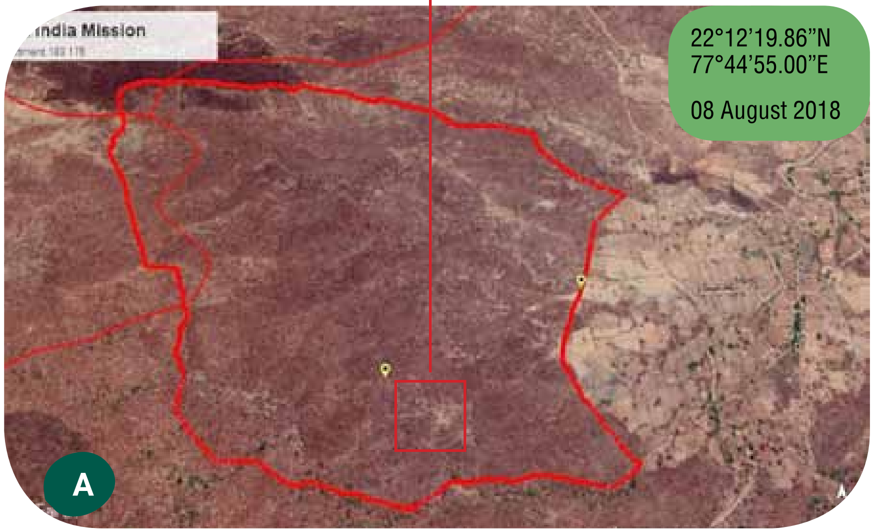

Landscape	Satpura Narmada
Division	North Betul
Mili-watershed	5D5A2j
Range	Shahpur
compartment	RF 183 & 176
Beat	West Mudha
JFMC	Muda & Kotha
Scheme	GIM
Project Duration	2018-2022
Submission	Sub Mission 1 (a) Moderately dense forest cover, but showing degradation
project cost	48.64 lakhs
Area	335
Planting Year	2019
Plants Planted	67000
species	Teak
Survival %	95.4 (as on October 2019)

Status of Natural Regeneration		
	Baseline Year Y0	First Year Y1
No. of Grids	63	63
Survey period	June 2019	October 2019
Regeneration per ha	442.46	736.00
Area under Natural Regeneration (%)	9.52	14.29

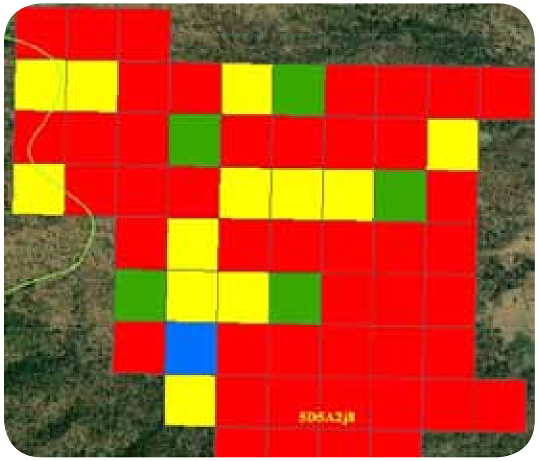

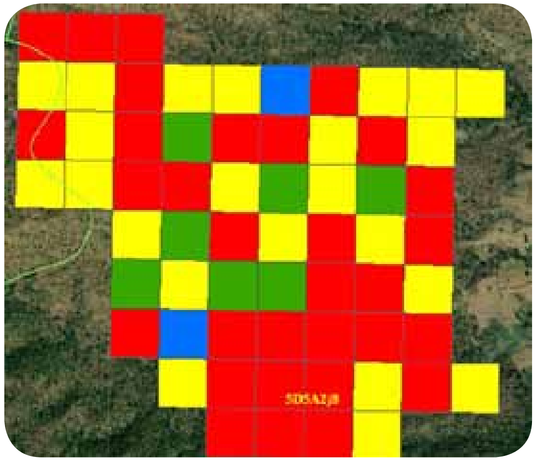

The Ground Reality

ग्रीन इंडिया मिशन अंतर्गत उपचारित लैंडस्केप के सतत् अनुश्रवण की व्यवस्था

1. चयनित मिली-वॉटरशेड/माइक्रो वॉटरशेड के नक्शे (shape file/ kml file) आईटी शाखा से प्राप्त करना।

2. वर्ष विशेष में उपचारित किये जाने वाले क्षेत्र की के.एम.एल फाइल तैयार करना। (इसके लिए उचित होगा कि GPS उपकरण के साथ क्षेत्र की सीमा का सीमांकन पूरी सीमा लाइन पर चलकर किया जावे एवं इस कार्रवाई के उपरांत प्राप्त पोलीगोन को के.एम.एल. के रूप में इस्तेमाल किया जाता है)

3. उपचारित किए गए क्षेत्र को तत्काल plantation monitoring system में दर्ज किया जाए एवं इसका unique plantation id No. दर्ज किया जाए, इसी आधार पर यह स्थापित होगा कि इस क्षेत्र का उपचार इस विशिष्ट योजना में किया जा रहा है।

4. आईटी शाखा द्वारा के.एम.एल. फाइल में 200 मीटर 200 मीटर का ग्रिड डालकर प्रत्येक ग्रिड पॉइंट की latitude एवं longitude की सूची दर्शाते हुए संबंधित वनमंडलों को वापस की जाती है।

5. क्षेत्रीय अधिकारियों द्वारा प्रत्येक ग्रिड पॉइंट पर मुख्यालय के निर्देश अनुसार पुनरुत्पादन सर्वेक्षण का कार्य करेंगे। मुख्य वन संरक्षक (विकास) के पत्र क्रमांक /विध्वर्किंग प्लान/4620 दिनांक 19.11.2003 के निर्देशों का पालन किया जावेगा। वृक्षों का गोशवारा प्रपत्र में सागौन, साल के साथ फलदार प्रजातियों के पौधे जैसे कुसुम, महुआ, अचार, जामुन एवं औषधीय पौधों हर्रा, आंवला, बेल, बहेड़ा एवं भिलवा के वृक्षों को भी पृथक पृथक दर्शाया जायेगा। प्राकृतिक पुनरुत्पादन हेतु कॉपीस से प्राप्त पुनरुत्पादन की गणना हेतु पृथक से कॉलम बनाकर भी दर्ज किया जावेगा। प्रत्येक ग्रिड का उपरोक्त के आधार पर जमीन के ऊपर बायोमास की गणना की जाएगी। इसी के आधार पर पूरे उपचारण क्षेत्र के जमीन के ऊपर बायोमास का आंकलन किया जायेगा।

6. कार्य प्रारंभ करने के पूर्व क्षेत्र की फोटोग्राफी की जावे एवं जिओ-कॉर्डिनेटेड फोटोग्रास सुरक्षित रखे जावें। वह स्थान एवं दिशा भी चिन्हित कर ली जावे। जहां से फोटोग्राफी की गई है। उदाहरण के तौर पर प्रत्येक ग्रिड पॉइंट पर उत्तर दिशा की ओर फोटो खींचने की (ड्रोन से) व्यवस्था की जा सकती है।

7. आगामी समय में विभिन्न उपचारों यथा क्षेत्र का घेराव, गड्ढा खुदाई, चेक डैम का निर्माण, पौधा रोपण, प्रथम/द्वितीय निंदाई के समय इसी प्रक्रिया को दोहराया जाये ताकि तुलना हेतु आधार मिल सके कि वृक्षारोपण का कार्य किस प्रकार प्रगति कर रहा है।

8. किये गए कार्य की तुलना हेतु गूगल अर्थ के चित्रों का भी इस्तेमाल किया जाये। जिसमे के.एम.एल. फाइल का उपयोग कर विभिन्न कालों में आने वाले परिवर्तनों को सुरक्षित रखा जाये।

9. वृक्षारोपण के प्रत्येक वर्ष में मृदा परीक्षण कराकर मृदा जैविक कार्बन का परीक्षण कराया जाये। इसके लिए प्रत्येक 50 हेक्टेयर क्षेत्र पर कम से कम एक क्षेत्र पर मृदा जैविक कार्बन का आंकलन किया जाये।

10. वृक्षारोपण की सामान्य जानकारी जैसे Landscape, मिली-वाटरशेड, वनमंडल, रेंज, बीट, संयुक्त वन प्रबंधन समिति का नाम, योजना, योजना की अवधि, सबमिशन, योजना की लागत, क्षेत्रफल, रोपण वर्ष, रोपित पौधे, रोपित प्रजातियाँ, मृदा जैविक कार्बन Y0/Y1, जीवितता का प्रतिशत का वर्णन करें।

11. वृक्षारोपण क्षेत्र में किये गए सर्वे की जानकारी एवं कलर ग्रिड की फोटो दर्शाएं।

12. उपरोक्त के आधार पर उपचारित लैंडस्केप किस तरह से परिवर्तित हो रहा है, इसका निरंतर अनुश्रवण किया जा सकेगा।

13. प्रदेश में ग्रीन इंडिया मिशन के तहत् उपरोक्त अध्ययनों के आधार पर 8 एल-1 लैंडस्केप की पहचान की गई है, जिसमें जलवायु परिवर्तन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाले 18 वनमण्डलों में 122 एल-2 लेवल लैण्डस्केप (मिलीवॉटरशेड) के 735 एल-3 लेवल लैण्डस्केप (माइक्रो वॉटरशेडों) शामिल हैं।

08 रीवा-सीधी परियोजना मण्डल में डिपॉजिट वर्क के अन्तर्गत वृक्षारोपण

पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण की वजह से वृक्षारोपण की आवश्यकता आज के समय में बढ़ गई है। औद्योगिक क्षेत्रों के आस-पास पर्यावरण संतुलन हेतु वृक्षारोपण की भूमिका और भी अहम हो जाती है। रीवा-सीधी परियोजना मण्डल अंतर्गत तीन जिलों क्रमशः रीवा, सीधी एवं सिंगरौली का क्षेत्र आता है। सिंगरौली जिले में नार्दन कोल फील्ड्स (एन.सी.एल.) की कोयला खदानें पाई जाती हैं जो लगभग 2202 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैली हैं। यह खदानें मुख्यतः मध्यप्रदेश के सिंगरौली जिले में तथा कुछ भाग उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले मे स्थित हैं। यह समस्त खदानें खुली है। इस खदानों को ओवर बर्डन डम्पस तथा समतल क्षेत्रों को पुनः हरा भरा करने की दृष्टि से एन.सी. एल. द्वारा म.प्र. शासन, वन विभाग से विचार विमर्श करने के उपरान्त वर्ष 1990 से खदानी क्षेत्रों में वृक्षारोपण का उत्तरदायित्व म.प्र. राज्य वन विकास निगम मर्यादित को सौंपा गया। म.प्र. राज्य वन विकास निगम के रीवा-सीधी परियोजना मण्डल द्वारा डिपाजिट वर्क के अन्तर्गत नार्दन कोलफील्ड्स लिमिटेड (एन.सी.एल.) की 6 परियोजनाओं अर्थात् अमलोरी, दुधीचुआ, गोरबी, जयंत, झिंगुरदा एवं निगाही में वर्ष 1990 से वृक्षारोपण कार्य संपादित किये जा रहे हैं।

म.प्र. राज्य वन विकास निगम मर्यादित द्वारा एन.सी.एल. के अंतर्गत समतल एवं ओव्हर वर्डन डम्पस क्षेत्रों में किये गये वृक्षारोपण के परिणाम अत्यंत उत्साह वर्धक प्राप्त हुये हैं तथा जीवित पौधों का प्रतिशत 80 से 90 तक प्राप्त हुआ है। सिंगरौली जिले के खदानी क्षेत्र में प्रवेश करने पर हरियाली स्वयं वृक्षारोपण की सफलता की कहानी को बयां करती है। वर्ष 1990 से वर्ष 2020 तक मिश्रित प्रजाति के 1.38 करोड़ पौधों का रोपण किया गया है। इनमें मुख्य प्रजातियाँ नीम, आंवला, बकायन, करंज, जंगल जलेबी, पेल्टाफोरम, बांस, सफेद सिरस, काला सिरस, चिरौल, खम्हेर, हर्रा एवं बहेड़ा इत्यादि हैं।

वर्तमान में पुराने रोपणों में रोपित पौधों के बीज से पुनर्उत्पादन भी देखा जा सकता है। कठिन स्थलाकृति, अधिक ढाल एवं कम उपजाऊ मिट्टी जैसी परिस्थितियों में म.प्र. राज्य वन विकास निगम, एन.सी.एल. एवं वृक्षारोपण कार्यो में संलग्न श्रमिकों के कठिन प्रयास से इन वृक्षारोपणों की पहचान राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर है। एन.सी.एल. को पर्यावरण प्रबंधन हेतु राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं, जिसमें म.प्र. राज्य वन विकास निगम द्वारा संपादित वृक्षारोपण से हुए जैव भूमि सुधार का महत्वपूर्ण योगदान है।

इसी प्रकार इस परियोजना मण्डल द्वारा डिपाजिट वर्क के अन्तर्गत नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन लिमिटेड (एन.टी.पी.सी.) की एक परियोजना विन्ध्यनगर में वर्ष 1990 से वृक्षारोपण कार्य सम्पादित किया जा रहा है। जिसमें वर्ष 2020 आज दिनांक तक 15.13 लाख मिश्रित प्रजाति के पौधों का रोपण किया गया है। एन.टी.पी.सी. परियोजना रिहन्द नगर में भी वर्ष 1996 से वर्ष 2005 तक रोपण का कार्य किया गया जिसमें करंज, सिस्सू, अशोक, कदम्ब आदि प्रजातियों के 5.00 लाख पौधे रोपित किये गये हैं। विन्ध्यनगर अंतर्गत समतल क्षेत्रों में किये गये वृक्षारोपण के परिणाम अत्यंत उत्साहवर्धक प्राप्त हुये हैं तथा पौधों का जीवितता प्रतिशत लगभग 85 से 90 तक है।

09 म.प्र राज्य वन विकास निगम ने पथरीली पहाड़ी पर वृक्षारोपण कर नया इतिहास रचा

क्षेत्रीय अधिकारियों की बैठक में वन मंत्री माननीय डॉ. कुंवर विजय शाह ने कहा कि म.प्र. राज्य वन विकास निगम ने ओंकार पर्वत के पथरीले पहाड़ी क्षेत्र में सफल वृक्षारोपण कर नया इतिहास रचा है। वन विकास निगम ने वानिकी विकास का लंबा सफर तय कर नई उपलब्धियां हासिल की हैं।

वन विकास निगम में क्षेत्रीय अधिकारियों की बैठक को माननीय वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह संबोधित करते हुए।

इस अवसर पर माननीय वन मंत्री के निगम की गतिविधियों एवं उपलब्धियों की प्रस्तुतिकरण देखते हुए कहा कि चारों ओर नमामि देवि नर्मदे से घिरे हुए ओंकार पर्वत के पथरीले 26.01 हेक्टर क्षेत्र में निगम द्वारा उत्कृष्ट वृक्षारोपण बड़ी जटिल परिस्थितियों में किया गया हैं। इसमें फलदार एवं जंगली प्रजाति के पौधे लगे हैं। इस वृक्षारोपण के लिए आवश्यक सामग्री पहुंचाने के लिए नदी पार करने के लिये नाव तथा पहाड़ी के लिये खच्चर आदि का उपयोग करना सराहनीय है। ओंकार पर्वत पर वर्ष 2017 के पूर्व का पथरीला क्षेत्र अब हरा-भरा होकर पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो चुका है। इस वन क्षेत्र में अब वन्य प्राणी भी आकर्षित हो रहे हैं, तो दूसरी ओर भू-क्षरण भी रुका है। रीवा-सीधी परियोजना मंडल, सीधी के अंतर्गत खदानी क्षेत्र में किया जा रहे वृक्षारोपण की सराहना की। स्वागत संबोधन में म.प्र. राज्य वन विकास निगम के प्रबंध संचालक श्री रमेश कुमार गुप्ता ने निगम की महत्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। श्री गुप्ता ने निगम को राज्य शासन द्वारा हस्तांतरित भूमि में वर्ष 2020 में विभिन्न परियोजनाओं के अंतर्गत कुल 1 करोड़ 54 लाख पौधे रोपित किये हैं। निगम द्वारा उच्च गुणवत्ता की सागौन रोपणियों का भी संचालन किया जा रहा है। पर्यावरण सुधार और वन विकास योजनाओं में निगम द्वारा प्रदेश के जरूरतमंद श्रमिकों को स्थानीय स्तर पर हर साल लगभग 40,000 मानव दिवस का रोजगार उपलब्ध कराया जा रहा है। क्षेत्रीय अधिकारियों की बैठक के अंत में स्वागत कार्यक्रम का संचालक श्री अजय श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर निगम के सभी अधिकारीगण सहित क्षेत्रीय अधिकारी आदि उपस्थित थे।

10 शल्यकर्णी (*Dillenia pentagyna*): दुर्लभ एवं संकटापन्न वृक्ष प्रजाति

वानस्पतिक/स्थानीय नाम

डिलेनिया पेन्टागायना/कल्लई, अग्गई

ऋतु जैविकी (Phenology)

इस वृक्ष में पुष्पन मार्च से अप्रैल तथा फलन मई माह में होता है।

प्रतिकिलो बीजों की संख्या

प्रतिकिलो बीज की संख्या 35000 से 40000 तक होती है।

जीवन क्षमता अवधि

बीज जीवन क्षमता अवधि 02 माह तक होती है।

अंकुरण क्षमता

सामान्य स्थिति में बीज से अंकुरण क्षमता 3 से 5 प्रतिशत तक होती है।

उपयोगिता की अवधि

इसका जर्मिनेशन 5-6 माह की अवधि में होता है। इसलिए बीज को जल्द ही उपयोग में लेना चाहिए। रोपण पूर्व बीज का उपचार आवश्यक है। बीज को हल्का रगड़कर पानी से साफ करें। हल्के गर्म पानी में 24 घण्टे रखने के पश्चात् रोपित करें।

शल्यकर्णी का ऐतिहासिक महत्वः

इस पौधे का महाभारतकाल के युद्ध में प्रयोग किया गया था। शल्यकर्णी अति दुर्लभ प्रजाति का पौधा माना जाता है। माना जाता है कि महाभारतकाल में युद्ध के दौरान इस पौधे का इस्तेमाल तब किया जाता है जब युद्ध में तीर, भाला और तलवार से घायल होने वाले सैनिकों के घाव को ठीक करना होता था। इसकी पत्तियों और छाल के रस को कपड़े में डूबाकर गंभीर घाव में बांध दिया जाता था, जिसके चलते घाव बिना किसी चीर-फाड़ के आसानी से कुछ दिनों में भर जाता था। घाव भरने के लिए शल्य क्रिया में उपयोग किए जाने की वजह से ही इसका नाम शल्यकर्णी रखा गया है। रीवा में शल्यकर्णी के संरक्षण के लिए कई वर्षों से प्रयास चल रहे हैं। यहां के छुहिया पहाड़ में इसके कुछ पुराने पेड़ पाए गए थे। शल्यकर्णी औषधि के बारे में चरक संहिता में भी उल्लेख मिलता है कि यह दुर्लभ प्रजाति की औषधि पहले शल्यक्रिया के वरदान मानी जाती थी।

11 Covid -19 Relief Campaign: Madhya Pradesh Tiger Foundation Society

About MPTFS

Madhya Pradesh Tiger Foundation Society (MPTFS) is a non-profit organization of Madhya Pradesh Forest Department, registered under Madhya Pradesh Society Act 1973. The Tiger Foundation Society envisions a world where human development is integrated with conservation of nature and all the processes that nurture life on earth. A world where human beings respect the rights of other creatures to exist and flourish in their natural habitats and where conflicts between people and wild animals are effectively mitigated and amicably resolved.

About the campaign MPTFS has started a campaign to provide relief, by distributing ration packets to frontline staff of forest department, daily wagers, guides, drivers and communities living in or near the protected areas of Madhya Pradesh. The campaign helped beneficiaries to fight COVID-19 pandemic by solving problems related to accessing basic ration in the wake of lockdowns, to some extent. Highlights of the campaign-

- The society helped around 7350 individuals (frontline staff, daily wagers, families of communities, guides & drivers) in PAs of Madhya Pradesh.
- A total donation of around 72.5 lacs was raised from April to May 2020.
- More than 400 individuals/organizations contributed in the campaign.

Rationale of the campaign

Recently, the novel corona virus (COVID-19) has spread across many countries worldwide. The spread is such that the World Health Organization (WHO) has declared it as a pandemic. India is no exception and the country is facing this public health emergency in its own way. To stop the spread of COVID-19, the Government of India declared several lockdowns in the past. This significantly affected the lives of people and is doing so in continuum. All sections of the society faced problems related to essential services amid lockdowns. However, the intensity of such problems was relatively higher for frontline staff of forest department, daily wagers, community living in or near Protected Areas (PAs) and guides and drivers (due to their dependency on tourism activities). for their basic needs. Away from their families and without access to ration, they could have gone to homes and remained there for the whole lockdown period. Front-line staff lives in camps in remote locations and access their basic needs through local weekly markets in nearby village or town. Due to lockdowns, local markets were not available But it was essential that the PA's Management should be working on full staff capacity due to various reasons. Firstly, the risk of incidence of forest fires were high due to summer season. Secondly, wild animals were frequently straying in populated areas which could led to human-wildlife conflict. This was evident around the world amid lockdowns. Conflicts were arising at many places due to straying of animals in

human dominated landscape as a result of the lockdowns. Amid lockdown period only, 14 human deaths were reported in PAs of Madhya Pradesh. This was due to interaction of humans with wild animals such as elephants, tigers, leopard and wild pigs.

Hence, it was need of the hour that all the staff should be on duty and equally motivated to ensure effective wildlife management and habitat protection. Communities have always played crucial role in wildlife conservation.

Synergy between forest department and communities Further to add, tourism sector has faced maximum brunt due to the pandemic. Tiger reserves and wildlife sanctuaries of Madhya Pradesh are major wildlife tourism destinations in India. The pandemic has also affected the lives drivers, guides, daily wagers etc. due to lockdowns across the country and disruption in tourism activities. They also faced problems related to access to ration, grocery and medical facilities as they are in remote locations.

To ensure that all the staff is on duty and motivated and help guides, drivers and daily wager to fight the pandemic, we had to address the problem of accessing basic ration. Therefore, MPTFS has started a campaign which was categorized in two phases. In the first phase, MPTFS addressed the need of access to ration for helping frontline staff and other needy ones by channelizing donation from willing donors towards the Department's Field Offices and Local resource persons such as grocery suppliers. MPTFS played the role of an enabler to bridge the gap between the needy ones and the donors.

Considering the relaxations in lockdown, problems related to accessing basic needs are ameliorated. But the tourism sector will still face collateral damage incurring due to management of this public health emergency. There will be loss of incomes and decline in employment for drivers, guides and others because their livelihood depends directly on tourism activities. Therefore, in the second phase, MPTFS is addressing the issue of income losses faced by guides and drivers working in tiger reserves/ national parks of Madhya Pradesh. To address the issue, MPTFS is raising funds through donation to provide employment to guides and drivers. Under this, park management is taking up infrastructural works for creating wages-based work opportunities for drivers and guides. This will help guides and drivers in earning livelihood and at the same time create permanent assets for better management. This phase is ongoing, and we are continuously striving to achieve its legitimate targets.

The first phase of the campaign was targeted to provide immediate relief to our frontline staff and other needy families living in the PAs. However, the second phase of the campaign is addressing the issue of income of losses by providing employment opportunities for guides and drivers.

In our crusade, we received support from our partner organization, NGOs and individuals. We highly appreciate their contribution towards wildlife conservation in Madhya Pradesh. Their contribution has supported our front-line staff and many families to fight the pandemic. We are grateful for their contribution.

Modus Operandi

MPTFS initiated this campaign using its Facebook page. Also, the society connected directly to its partner organization and individuals. The society had raised/channelized donation in three ways. The details are as follows-

- ***Donation in cash towards MPTFS-*** This donation was received in MPTFS account via electronic transfer. This donation was then transferred to different PAs in a timely manner as per their needs.
- ***Donation in cash towards PAs-*** The donation was received in Samiti accounts of PAs via electronic transfer and used by PAs directly in procurement of ration.
- ***Donation in kind towards PAs***- The donated ration was distributed to frontline staff and other needy ones through PA management. Most of the donors wished to donate in kind for the cause. In this matter, the local management helped donors by identifying a few grocery shops in the nearby region of PAs. Then donors transferred funds towards grocery shops and the PA Management received the ration from grocery shops for distribution. This expedited the process and relief reached to needy ones in very short time.

Donation

Under this campaign, MPTFS has received huge support from all the sections of the society. We received donations from individuals, organizations, wildlife enthusiast groups etc. Many students, teachers and schools came

forward for the cause. Many international organizations have also contributed towards the campaign. We express our gratitude towards our active partners in conservation such as Wildlife Conservation Trust India, World Wide Fund for Nature-India, Wildlife Trust of India etc.

Volunteers in the campaign

Many organization and individuals voluntarily and actively helped team MPTFS in raising donation. They also helped us in connecting with donors through various media such as- Facebook, WhatsApp, Emails etc.

Milestones achieved

In this campaign, we received huge support from all sections of the society. A few highlights of the support received are as follows-

* More than 400 individuals and organizations came forward and contributed for supporting wildlife warriors. Your valuable contribution not only provided ration to wildlife warriors but also motivated them in these tough times.

* More than Rs 72.5 lac was raised through this initiative with the help of individuals and our supporter organizations. Out of this donation, we received around Rs. 23.5 lacs as cash and around Rs. 33 lacs as kind donation in phase one. Around Rs. 16 lacs raised for phase two of the campaign.

* More than 7300 frontline staff/ daily wagers/ drivers/ guides/ villagers received ration packets worth Rs. 1000 and Rs. 500 in 13 protected areas of Madhya Pradesh.

More than 400 individuals and organizations contributed for the cause of wildlife conservation

More than Rs 72.5 lac (cash & kind) was raised through this initiative of MPTFS

More than 7500 individuals/families received ration support in 1st phase of the campaign

12 विंध्य हर्बल्स रोग प्रतिरोधी औषधि किट

म.प्र. राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ, मर्यादित की आयुर्वेदिक औषधि प्रसंस्करण इकाई लघु वनोपज प्रसंस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र (एम.एफ.पी.- पार्क) वन परिसर, बरखेड़ा पठानी, भोपाल द्वारा "विंध्य हर्बल्स ब्रांड" के अंतर्गत आयुर्वेदिक एवं हर्बल औषधियों का उत्पादन कार्य विगत् 14 वर्षों से अधिक समय से किया जा रहा है। इस केन्द्र द्वारा म.प्र. सहित देश के विभिन्न राज्यों में आयुर्वेदिक औषधियों की शासकीय आपूर्ति एवं खुदरा विपणन क्षेत्र में लगभग 250 प्रकार की औषधियों का विक्रय किया जाता है।

वर्तमान परिदृश्य में कोरोना संक्रमण (कोविड-19) की रोकथाम, बचाव एवं प्रबंधन हेतु विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों को लाभकारी पाया गया है। म.प्र. शासन आयुष विभाग द्वारा "जीवन अमृत योजना" के अंतर्गत आयुर्वेदिक औषधि त्रिकुट काढ़े के पैकेट्स प्रदेश के सामान्य जन को नि:शुल्क वितरित किये गये हैं। इस हेतु प्रसंस्करण केन्द्र द्वारा 4368000 नग त्रिकुट काड़े के पैकेट्स तैयार कर आयुष विभाग को उपलब्ध कराये गये हैं।

रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्युनिटी) बढ़ाने में आयुर्वेदिक औषधियों के प्रभावी उपाय के रूप में एवं उनकी महत्ता को देखते हुए विंध्य हर्बल्स द्वारा 08 विभिन्न प्रकार की महत्त्वपूर्ण औषधियों को समाहित करते हुए एक रोग प्रतिरोधि किट (इम्युनिटी बूस्टर किट) सुविधाजनक बॉक्स में तैयार की गई है।

श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन एवं श्री विजय शाह, माननीय वन मंत्री, म.प्र. शासन द्वारा दिनांक 27.08.2020 को इस विंध्य हर्बल्स, इम्युनिटी बूस्टर किट का लोकार्पण किया।

इम्युनिटी बूस्टर किट का विवरण निम्नानुसार है-

क्र.	उत्पाद का नाम	रोगाधिकारी
1	त्रिकुट चूर्ण (काढ़ा)	सर्दी-जुकाम, श्वास, खासी, बुखार तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने हेतु।
2	गिलोय चूर्ण	रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, वात रोग व ज्वर में लाभदायक।
3	संशमनी वटी	रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, ज्वर, सर्दी-जुकाम, में उपयोग।
4	अणु तेल	संक्रमण रोकथाम, साइनस, नाक व गले के शुष्कपन के रोकथाम में उपयोगी।
5	कालमेघ	मलेरिया, विषम ज्वर, यकृत रोग प्लीहा वृद्धि में उपयोगी।
6	अश्वगंधा चूर्ण	पौष्टिक एवं बलदायक, कफ, तनाव व वात रोग में लाभदायक।
7	वनीय शहद	खाद्य अनुपूरक, नेत्रों के लिए हितकारी, श्वास, अतिसार, खासी, पित्त, रक्त विकार आदि में उपयोगी।
8	अर्जुन हर्बल चाय	हृदय रोग, उच्च रक्तचाप तथा कोलेस्ट्राल को कम करने में लाभदायक।

इम्युनिटी बूस्टर किट में सम्मिलित औषधियों का उपयोग, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में लाभदायक है। एक सामान्य परिवार के 10 दिवसीय उपयोग हेतु मात्रा किट में प्रदाय की गई है। इस इम्युनिटी बूस्टर किट में उपलब्ध 08 औषधियों के खुदरा विपणन मूल्य को सम्मिलित करते हुए प्रति किट का मूल्य 480/- रुपये निर्धारित किया गया है। विन्ध्य हर्बल्स द्वारा यह इम्युनिटी किट संजीवनी आयुर्वेदिक केन्द्रों, फैक्ट्री आउटलेट, बरखेड़ा पठानी एवं अन्य आउटलेट्स पर उपलब्ध कराया गया है।

उत्पाद प्राप्त करने के लिए संबंधित जिले के प्रबंध संचालक, जिला वनोपज सहकारी यूनियन, कार्यालय ,एवं संजीवनी आयुर्वेद केन्द्रों पर सम्पर्क किया जा सकता है। स्वयं उत्पादों का अधिक से अधिक उपयोग कर स्वास्थ्य लाभ लें और अन्य लोगों को भी प्रेरित करें। उत्पादों के संबंध में अधिक जानकारी के लिए एम.एफ.पी.-पार्क, बरखेड़ा पठानी, भोपाल से सम्पर्क करें- फोन: 0755-2970629, 2970630,

ईमेल : mfpparc@gmail-com

13 सजग वन अमला भोपाल

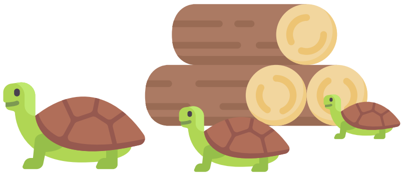

विलुप्त प्रजाति के कछुओं का रेस्क्यू : वाइल्ड लाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो, उड़नदस्ता एसएएफ की संयुक्त कार्रवाई जबलपुर से भोपाल आई वाइल्ड लाइफ क्राइम कंट्रोल ब्यूरो (डब्ल्यूसीसीबी) ने मुखबिर से मिली सूचना पर भोपाल उड़नदस्ता टीम और एसएएफ के साथ मिलकर श्यामला हिल्स थाना इलाका स्थित आंचलिक विज्ञान केंद्र के सामने से विलुप्त प्रजाति का एक इंडियन टेंट टर्टल और अन्य 8 कछुए जप्त किये हैं। सूचना को गंभीरता से संज्ञान लेते हुए डीएफओ के निर्देश पर उड़नदस्ता और एसएएफ की टीम ने कार्रवाई की। कार्रवाई के दौरान आरोपी हुजेफा एक फॉसिनो स्कूटी की डिग्गी में 9 कछुए रखे हुआ था और ग्राहक बनकर आये डब्ल्यूसीसीबी के स्टाफ को 17500 रुपये में 8 कछुए बेचने की कोशिश कर रहा था। कछुए सामने आते ही वन विभाग की टीम ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया।

25 हजार रुपए तक में बेच रहा था कछुआ, टीम ने ग्राहक बनकर पकड़ा

उड़नदस्ता और वाइल्डलाइफ वार्डन ने लाखों की अवैध लकड़ी पकड़ी

उड़नदस्ता भोपाल और वाइल्डलाइफ वार्डन ने जब्त किया (लकड़ियों का अवैध परिवहन): भोपाल सीसीफ रवीन्द्र सक्सेना, भोपाल डीएफओ एच.एस. मिश्रा के मार्गदर्शन और एसडीओ एस.एस. भदौरिया, एसडीओ सुनील भारद्वाज के निर्देशन में वन अपराधो पर लगाम लगाने में चौबीस घंटे और सातों दिन उड़नदस्ता टीम और जिला वन्यप्राणी अभिरक्षक आसिफ हसन सक्रिय हैं। सूचना मिलने पर जिला वन्यप्राणी अभिरक्षक और उड़नदस्ता टीम ने गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल क्षेत्र से कार्रवाई करते हुए दो ट्रक लकड़ी पकड़ने में सफलता हासिल की है। जिला वन्यप्राणी अभिरक्षक आसिफ हसन ने मुखबिर की सूचना पर जिला राजगढ़ के ग्राम कोठरी से भोपाल आये ट्रक क्रमांक आर.जे. 20-जी.ए.-5779 को गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल क्षेत्र में रोककर चेक किया गया तो उसमें बबूल और नीम की लकड़ी भरी हुई थी। वैध दस्तावेज नहीं मिलने पर वाहन को अवैध लकड़ी सहित जब्त कर लिया गया। उड़नदस्ता प्रभारी आर. के. चतुर्वेदी ने इस कार्रवाई के बाद सुबह छह बजे राजधानी भोपाल के पूराछिंदवाड़ा से आम के पेड़ को काटकर अवैध परिवहन कर रहे ट्रक क्रमांक डीएलआईएल-के-2298 में गोविंदपुरा इंडस्ट्रियल इलाके से आम की लकड़ी बरामद की गईं। वैध दस्तावेज नहीं मिलने पर वाहन को अवैध लकड़ी सहित जब्त कर लिया गया। उड़नदस्ता प्रभारी आर. के. चतुर्वेदी के अनुसार दोनों वाहनों में तकरीबन डेढ़ लाख रुपये कीमत की अवैध रूप से काटी और परिवहन की जा रही इमारती लकड़ी भरी हुई थीं।

वन और वन्यप्राणी की सुरक्षा में वन विभाग भोपाल का सदैव उत्कृष्ट योगदान रहा है।

14 ग्राम वन समिति

परसाही

ग्राम परसाही, उत्तर सामान्य वनमण्डल, बालाघाट के बिरसा-दमोह परिक्षेत्र में स्थित है। वर्ष 2000 में वन विभाग के अधिकारियों एवं ग्रामवासियों ने वनों पर आधारित आजीविका को सुदृढ़ करने एवं स्थानीय पर्यावरण संरक्षण के संबंध में परिचर्चा करके ग्राम वन समिति परसाही का गठन किया। समिति में एक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सहायक सचिव सहित तेरह सदस्यों की कार्यकारिणी गठित की गई। समिति को कक्ष क्रमांक 1702, क्षेत्रफल 77 हेक्टेयर एवं कक्ष 1703, क्षेत्रफल 74.86 हेक्टेयर, कुल क्षेत्रफल 151.86 हेक्टेयर का आवंटन किया गया। समिति को कक्ष क्रमांक 1702, क्षेत्रफल 77 हेक्टेयर एवं कक्ष 1703, क्षेत्रफल 74.86 हेक्टेयर, कुल क्षेत्रफल 151.86 हेक्टेयर का आवंटन किया गया। अत्यधिक जैविक दबाव के कारण यह वन क्षेत्र पूर्णतः वृक्ष विहीन एवं घास विहीन हो गया था। वन क्षेत्र में केवल जड़ भण्डार तथा ठूंठ शेष रह गये थे। तत्समय प्रचलित कार्य आयोजना अवधि 1985 - 2001 के अनुसार समिति को आवंटित कक्ष बिगड़े वनों के सुधार के अन्तर्गत वर्गीकृत थे। समिति के सदस्यों ने आपसी सहयोग से वनक्षेत्र में अवैध गतिविधियों जैसे कटाई, जंगल में अवैध चराई, अतिक्रमण की रोकथाम का संकल्प लिया। ग्राम वन समिति परसाही के लोगों ने यह भी निर्णय लिया कि केवल जंगल में गिरी पड़ी सूखी लकड़ी से ही निस्तार करेंगे। समिति के वर्तमान अध्यक्ष श्री बाबूलाल दांदरे, उपाध्यक्ष श्री मोहर पंचवे के नेतृत्व में समिति वन सुरक्षा का कार्य पूर्ण लगन से सम्पादित कर रही है।

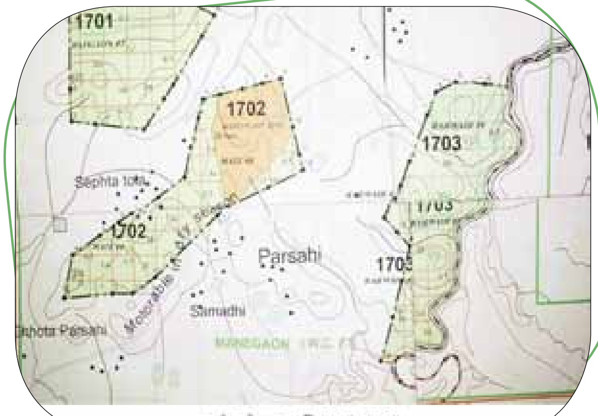

कार्य आयोजना अवधि 2015 - 2025

वन क्षेत्र की सुरक्षा हेतु ग्रामवासियों ने निर्णय लिया कि प्रतिदिन 10-10 व्यक्तियों के समूह में जंगल में गश्ती करेंगे एवं यह सिलसिला लगातार 2 वर्ष तक चलता रहा। इससे क्षेत्र में होने वाली सभी अवैध गतिविधियों पर नियंत्रण स्थापित हो गया एवं सभी ग्रामवासियों ने अनुशासन का पालन करना प्रारम्भ कर दिया। 2 वर्ष बाद समिति द्वारा निर्णय लिया कि वन क्षेत्र की रक्षा करने के लिए 2 सुरक्षा श्रमिक रखे जाएंगे एवं उनके मानदेय का भुगतान करने के लिए प्रत्येक घर से प्रतिवर्ष दो कुड़ो (12 किलो) धान एकत्रित किया जाएगा। वन क्षेत्र में सुधार के लिए ग्रामवासियों द्वारा ठूंठों एवं पोलार्ड की कटाई, घास एवं वृक्षों के स्थानीय बीजों का रोपण आदि कार्य किए गए,

जिसका परिणाम यह हुआ कि बीस वर्ष की अवधि में वन क्षेत्र का छत्र घनत्व 0.1-0.2 से वर्तमान में बढ़कर 0.5 पहुंच गया है। वर्तमान में प्रचलित कार्य आयोजना अवधि 2015 - 25 में वन समिति को आवंटित दोनों कक्ष बिगड़े वनों के सुधार कार्यवृत्त से परिवर्तित होकर सुधार कार्य वृत्त में शामिल हो गए हैं। कार्य आयोजना के संनिधि मानचित्रों से वन क्षेत्र में आए बदलाव का सबसे स्पष्ट प्रमाण उपलब्ध होता है। कार्य आयोजना अवधि 2015 -25 में तैयार किए गए संनिधि मानचित्र में क्षेत्र का औसत छत्र घनत्व लगभग 0.5 है, जो समिति के द्वारा की गयी उत्तम सुरक्षा व्यवस्था के कारण ही सम्भव हुआ है।

वन समिति के अथक प्रयासों का परिणाम है कि आज इस वनक्षेत्र में 650 वृक्ष प्रति हेक्टेयर उपलब्ध है। ग्राम वन समिति परसाही के द्वारा परस्पर सहयोग एवं जन-जागरूकता से किये गए कार्य का लाभ ग्रामीणों को प्रदान करने के लिए समिति को उत्कृष्ट समिति के अन्तर्गत वर्गीकृत कर सूक्ष्म प्रबंध योजना बनायी जा रही है। समस्त उपचार कार्य वन समिति द्वारा सम्पादित किया जाएगा। आवंटित वन क्षेत्र में प्रबंध योजना के अनुसार सफाई एवं विरलन से प्राप्त होने वाली जलाऊ लकड़ी एवं बल्लियां संयुक्त वन प्रबंध के संकल्प 2001 के अनुसार नि:शुल्क समिति को उपलब्ध करायी। जाएगी ग्राम वन समिति परसाही द्वारा प्रदर्शित कार्य वनों के संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां स्थानीय लोगों ने स्वयं संगठित होकर वन संरक्षण सुनिश्चित किया है। यह इस बात का भी सबूत है कि स्थानीय लोग अपने संसाधनों के महत्व को समझते हैं एवं बेहतर भविष्य के लिए वर्तमान उपयोग को त्याग कर संसाधनों का प्रबंधन करने की क्षमता रखते हैं। यह समिति वन संरक्षण में रूचि रखने वालों एवं ग्राम वन समितियों के लिए प्रेरणा का माध्यम बन सकती है।

समिति के वन क्षेत्र का वर्तमान चित्र

ईसरा, उमरिया

ग्राम वन समिति, ईसरा उमरिया का गठन 25 दिसंबर 1994 को किया गया। पूर्व छिंदवाड़ा वन मंडल के छिंदवाड़ा परिक्षेत्र के सारना उप-परिक्षेत्र की उमरिया ईसरा बीट में समिति को आरक्षित वनखंड - 77 धतूरा, कक्ष क्रमांक 1349 आवंटित किया गया, जिसका कुल क्षेत्रफल 282.775 हेक्टेयर है। जब यह वन क्षेत्र समिति को आवंटित किया गया था तो पूर्णतया वन विहीन था, समिति द्वारा प्रभावी सुरक्षा देकर वन को पुनर्स्थापित कर दिया है। यह कक्ष सभी दिशाओं में राजस्व क्षेत्र से घिरा हुआ है, इसके बावजूद वन समिति द्वारा 25 वर्ष के लंबे अंतराल से क्षेत्र की पूर्ण लगन एवं निष्ठा से सुरक्षा की जा रही है। वर्ष 2014-15 में वन समिति को आवंटित क्षेत्र की सूक्ष्म प्रबंध योजना तैयार करके लागू की गयी। ग्राम वन समिति उमरिया की कहानी संयुक्त वन प्रबंधन के संबंध में प्रचलित दो धारणाओं का विखंडन करती है। प्रथमतः, यह कि जब एक वन समिति अपने क्षेत्र की सुरक्षा करती है तो उस समिति के सदस्य आसपास के अन्य वन क्षेत्रों से सामाजिक संगठन करना संभव हो पाता है तथा एक समुदाय के ग्रामों में ही संयुक्त वन प्रबंधन सफल हो पाता है।

उमरिया ईसरा में सामुदायिक भागीदारी की नीति के तहत् प्रथम चरण में ग्राम वन समिति का गठन किया गया। ग्राम में निवास करने वाले 342 परिवारों में से 150 पिछड़ा वर्ग, 144 अनुसूचित जन जाति, 31 अनुसूचित जाति एवं 17 परिवार सामान्य वर्ग की श्रेणी में आते हैं। इसी प्रकार, 342 परिवारों में से 269 कृषि भूमि धारक, 48 भूमिहीन एवं 25 परिवार व्यवसाय करके अपनी आजीविका

वन समिति की प्रथम कार्यकारिणी-सागौन रोपण - 1999

चलाते हैं। ग्राम में कृषि के लिए उपलब्ध कुल 650 हेक्टेयर भूमि है जिसमें से 215 हेक्टेयर भूमि सिंचित है तथा शेष भूमि पर वर्षा आधारित खेती की जाती है। फसलें धान गेहूं चना मटर सोयाबीन मक्का एवं मूंगफली है। पशु पालन भी एक ग्रामवासियों के आजीविका का एक मुख्य आधार है ग्राम में कुल 1175 मवेशी हैं। अधिकांश चारे का प्रबंध कृषि भूमि से किया जाता है तथा आंशिक रूप से वन क्षेत्र में चराई की जाती है। ग्राम वन समिति के गठन के समय से ही स्वर्गीय श्री किशन लाल उइके के नेतृत्व में ग्राम के लोगों ने वन क्षेत्र की सुरक्षा का कार्य प्रारंभ किया। समिति के उत्साह को देखते हुए विश्व बैंक द्वारा वित्त पोषित वानिकी परियोजना के प्रथम चरण में समिति का चयन किया गया तथा तत्समय प्रचलित व्यवस्था के तहत् संपूर्ण क्षेत्र को लगभग 30 हेक्टेयर की उपचार इकाइयों में विभाजित करके सूक्ष्म प्रबंध योजना बनायी गयी। वर्ष 1995-96 में प्रथम इकाई का उपचार किया गया। 3 वर्ष तक वानिकी परियोजना के तहत एवं उसके पश्चात विभागीय बिगड़े वनों के सुधार कार्यक्रम के अंतर्गत वन क्षेत्र में वृक्षारोपण कार्य संपादित किए। यहां यह उल्लेखनीय है कि समिति के द्वारा कभी भी क्षेत्र की रक्षा के लिए पशु अवरोधक खंती या फेंसिंग का प्रयोग नहीं किया गया, बल्कि उसके स्थान पर सामाजिक रूप से संगठित होकर अवैध कटाई एवं चराई से क्षेत्र की रक्षा की गई। समिति के वनक्षेत्र में प्रति वर्ष 100 क्विंटल सीताफल, 60 मानक बोरा तेन्दूपत्ता, 25 क्विंटल महुआ फूल, 35 क्विंटल महुआ गुल्ली तथा 2 क्विंटल अचार (चिरोंजी) का उत्पादन होता है। सीताफल का उत्पादन वन समिति के गठन के पश्चात् वन क्षेत्र को मिली सुरक्षा की वजह से प्रारम्भ हुआ है।

सागौन वृक्षारोपण - 2016

15 राष्ट्रीय वन शहीद दिवस-11 सितम्बर वनकर्मियों के बलिदान का सम्मान

वन और वन्य जीवों के संरक्षण में बलिदान देने वाले वनकर्मियों की याद को चिरस्थायी बनाने के लिए हर साल 11 सितम्बर को वन शहीद दिवस मनाया जाता है। इस साल भी वन शहीद दिवस पर शहीदों के परिवार कर सम्मान और रक्तदान शिविर का आयोजन चार इमली स्थित फॉरेस्ट रेस्ट हाउस में किया गया। देश में सबसे ज्यादा वन मध्यप्रदेश में है, प्रदेश में वनकर्मी वन क्षेत्रों में अत्यंत कठिन परिस्थितयों में भी अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं। अब तक प्रदेश में लगभग 50 से अधिक वन अधिकारी और कर्मचारी वन और वन्य प्रणियों की रक्षा करते हुए शहीद हो चुके हैं, जिसके लिए उनके बलिदान को याद करना जरूरी हो जाता है। राष्ट्रीय वन शहीद दिवस पर डॉ. कुंवर विजय शाह माननीय वन मंत्री द्वारा शहीद वनकर्मियों के परिवार को सम्मानित किया। इस अवसर पर प्रमुख सचिव वन अशोक वर्णवाल, (प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख) राजेश श्रीवास्तव एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारिगण उपस्थित रहे।

इस अवसर पर वन मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह ने कोविड-19 रिलीफ कैम्पेन-2020 पुस्तक का विमोचन किया।

16 भारतीय वन सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति एवं सेवानिवृत्ति (जुलाई-सितम्बर 2020)

पदोन्नति (जुलाई-सितम्बर 2020)

श्री सुरेन्द्र सिंह राजपूत

(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राज्य लघुवनोपज संघ)

श्री आनन्द कुमार

(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, अनुसंधान विस्तार एवं लोकवानिकी)

सेवानिवृत्ति (जुलाई-सितम्बर 2020)

श्री एस.के. मण्डल

(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, वाइल्ड लाइफ)

श्री महेन्द्र यादुवेन्दु

(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, उत्पादन)

श्री प्रशांत कुमार

(अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली)

श्री अनिल कुमार श्रीवास्तव

(प्रधान मुख्य वन संरक्षक, लघु वनोपज संघ)

श्री आर श्रीनिवास मूर्ति

(अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, जैवविविधता बोर्ड)

श्री सरपत सिंह रावत

(अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक, समवन्य)

श्री के.एस. पट्टा

(वनमण्डलाधिकारी, मण्डला)

अखबारों के आईने में

पौधरोपण के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से वन विभाग की पहल

अहमदपुर नर्सरी में अब राशि-ग्रहों के पौधे भी

नर्सरी में इस साल ही तैयार हुए हैं ये पौधे

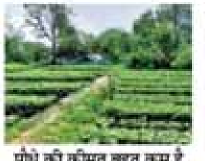

पौधे की कीमत बहुत कम है

12 राशियों के लिए निर्धारित पौधे

9 ग्रहों के लिए निर्धारित पौधे

पर्यटकों को प्रकृति से जोड़ेगा जंगल कैंप

वन मंत्री कुंवर विजय शाह ने किया सतधारा ईको जंगल कैम्प का शुभारंभ

जंगल कैम्प के साथ बौद्ध स्तूप का कर सकेंगे भ्रमण

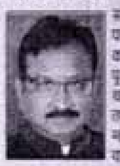

इकोलॉजिकल पार्क में होगी सफारी, पर्यटक निहार सकेंगे अनूठा जंगल

एक्सक्लूसिव

नर्सरी में तैयार हो रहे रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले पौधे, दुर्लभ औषधियां

सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में सात दिवसीय हाथी उत्सव शुरू, परोसेंगे मनपसंद भोजन

मढ़ई में अब 7 दिन हाथियों की मौज, रोज होगी मालिश

आदिवासियों के कल्याण के लिए निरंतर कार्य कर रही सरकार

वनोपज का समर्थन मूल्य बढ़ाना लाभदायक सिद्ध हुआ

धर्म . समाज . संस्था

अभियान का आगाज • विधायक चैतन्य काश्यप ने वृक्ष मित्र वाहिनी को लाल रिबन काटकर रवाना किया

हर घर हरियाली अभियान में ज्यादा बिके तुलसी के पौधे, लोग बोले- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ेगी

कविता
''वन कोषों का विघटन यों ही ''

इस अनमोल संपदा का फ़िर जिक्र किताबों में ही होगा,
वन कोषों का विघटन यों ही होता रहा अगर द्रुत गति से ।।
प्रकृति वधु के जेवर हैं ये
जंगल महज नहीं ये जंगल,
इन पर ही निर्भर है प्रियवर
अपना मंगल और अमंगल,
नहीं तीसरा कोई कारण, केवल दो वज़हें होती हैं,
या तो लापरवाही होती या लुटता यह धन सहमति से ।।
घाट हरे ये गगन चूमते
वृक्ष नहीं जो रहे हमारे,
आस रहेगी नज़र रहेगी,
मगर न होंगे सुखद नज़ारे,
विधवा की मांगों सी सूनी नज़र आयेंगीं नदियां सारी,
रोक नहीं पायेगा कोई, मरुस्थलों वाली परिणति से ।।
बहती हुई मृदा के रोधक
प्राण वायु, जीवन जल इनसे,
यही चिकित्साधार हमारे
कंद मूल बूटी फ़ल इनसे,
किया नहीं 'वन विधि' का रक्षण तो फिर कोई लाभ नहीं है,
फ़र्जी दस्तावेजों वाले किसी प्रदर्शन या प्रस्तुति से ।।
झोंक दिये संसाधन लेकिन
कहीं रही तकनीकी खामी,
तभी सफलता के प्रतिशत में
मिलती रही हमें नाकामी,
तोड़ें परम्परा हम अपनी, बेहतर होगा काम निकालें,
थोड़े तकनीकी कौशल से थोड़ी मति थोड़ी सम्मति से ।।

रत्नदीप खरे
वन विस्तार अधिकारी, झाबुआ
मोबा. : 9826043425

विश्व हाथी दिवस
१२ अगस्त२०२०
हाथी झुण्ड में रहता है। और झुण्ड की मुखिया
उम्र दराज मादा हाथी होता है।

World Elephant day
12th August
Only 40,000 to 50,000 Asiatic Elephant left in wild.
India is home to 60% of them.
Let us pledge to save these gentle giants and their habitat.
NOVA NATURE WELFARE SOCIETY

विश्व हाथी दिवस २०२०
NOVA NATURE WELFARE SOCIETY
रोचक तथ्य
हाथी दिन में लगभग २से ४ घंटे सोते है
हाथी दिन के १६घंटे सिर्फ खाने में ही बिता देते है
हाथी आमतौर पर लगभग ६ किमी रफ्तार से चलते है
हाथी लंबे समय तक पानी में तैर सकते है

विश्व हाथी दिवस
१२ अगस्त २०२०
NOVA NATURE WELFARE SOCIETY
रोचक तथ्य
हाथी लेटकर नही बल्कि खडे होकर सोते है।
दिन में २से ४ घंटे सोते है।

74 वां स्वतंत्रता दिवस समारोह : प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख राजेश श्रीवास्तव द्वारा ध्वजारोहण

Global Tiger Day, 29th July